शोध सार / Research summary

कवि रमाशंकर 'विद्रोही' की कविताओं में युगचेतना

रमाशंकर 'विद्रोही' प्रगतिशील चेतना के कवि हैं। अनुभूतियों और भावनाओं की तरलता इनकी कविताओं में पर्याप्त मात्रा में है । किसानों और मजदूरों के प्रति इनके मन में गहरी करुणा विद्यमान है । आज के समय, समाज और राजनीति को देखकर विद्रोही ने अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से इस पर तगड़ा प्रहार किया है। विद्रोही की कविता केवल अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि एक प्रतिरोध है। कविता ठीक-ठीक तत्कालीन समय की शासन सत्ता से लड़ती है और मुठभेड़ करती है । इनकी कविताओं के केंद्र में सामान्य मनुष्य है जो हल चलाता है, मजदूरी करता है, रिक्शा चलाता है, दफ्तरों में चाकरी करता है और सबसे बड़ी बात उनकी कविताओं का मनुष्य विद्रोही है। विद्रोही के यहाँ कविता का व्याकरण भी बदलता नजर आता है, जिससे भाषा, भाव, संवेदना में नई अनुभूति आती है। विद्रोही विश्व साहित्य के सहयात्री हैं। उन्होंने अपनी सीमाओं को स्वयं तोड़ा है। उन्हें शुरु से ही अपने लेखन पर पूर्ण भरोसा रहा। अपने समय, समाज के प्रति सचेत रहना, व्यवस्था के सबसे वंचित व्यक्ति की आवाज बनने में विद्रोही को हमेशा मजा ही आया। विद्रोही की कविताएँ हमारे मानस को गहरे और गहरे उतारते चली जाती हैं। लेकिन कविताओं में एक ऐसी तड़प है जो आग पैदा करती है । जहाँ स्त्री नहीं जलती, बल्कि पूरी कायनात जलते हुए अक्षर में बदल जाती है। जलते हुए अक्षर को पढ़ते हुए एहसास सुलगने लगते हैं –

"सदियाँ बीत जाती हैं

सिंहासन टूट जाते हैं ,

लेकिन बाकी रह जाती है खून की शिनाख्त

गवाहियाँ बेमानी बन जाती हैं

और मेरा गाँव सदियों की जोत से वंचित हो जाता है

क्योंकि कागजात बताते हैं कि

विवादित भूमि राम जानकी की है।"

विद्रोही की कविता हमारे अकादमिक बौनेपन को सीधे-सीधे चुनौती देती है। विद्रोही भी कबीर और मुक्तिबोध की तरह फटे हाल रहते हैं लेकिन उनमें आत्मकरुणा का लेशमात्र भी नहीं रहा। उन्होंने कभी बैठकर अपनी कविता का वाचन नहीं किया। उन्होंने अपनी कविता को आंदोलनों में पढ़ा , पुलिस की लाठियों का मुकाबला अपनी कविताओं से किया। लिखित और मुद्रित शब्द के आधुनिकतावादी वर्चस्व को विद्रोही ने कभी नहीं माना। उनकी कविता की अनेक धुनें हैं, अनेक रंग हैं, उनके सोचने का तरीका ही कविता का तरीका है। कविता में ही वे रोते हैं, गाते हैं, बतियाते हैं। यदि उनसे पूछा जाता था कि कविता क्या है ? तो वे कहते थे कि –

कविता क्या है

खेती है

कवि की बेटा-बेटी है

बाप का सूद है

माँ की रोटी है।

कविता की अभिजात्य परंपरा से कोसों दूर वह कविता का खुदरा व कटीला रास्ता चुनते रहे और कहते रहे "मैं तुम्हारा कवि हूँ।" आज के समय का दुर्लभ कवि ही है जो कविता को अपने कहने, रहने व लड़ने का हथियार बनाता है। उन्हें मिथकों का पूरा ज्ञान है, वे इतिहास की कमजोरियों को भली-भाँति जानते हैं। विद्रोही उस झूठे इतिहास और उसके बोध को सड़क पर निहत्था करना चाहते थे। वे मार्क्स को समझते थे, और वे नागार्जुन की भांति इस बात को भी समझते थे कि दुनिया का पेट, प्यार और युद्ध से नहीं भरेगा, रोटी से भरेगा। सामंतवाद के उदय को कितना सहज समझा देते हैं –

“इतिहास में पहली स्त्री की हत्या

उसके बेटे ने अपने बाप के कहने पर की

जमदग्नि ने कहा कि ओ परशुराम

मैं तुमसे कहता हूँ कि अपनी माँ का बध कर दो

और परशुराम ने कर दिया

इस तरह से पुत्र पिता का हुआ

और पितृसत्ता आई”

विद्रोही हमारे वंचित राष्ट्र के कवि हैं। वे उन लोगों के कवि हैं जिन्हें अभी राष्ट्र बनना है। विद्रोही मूलतः इस देश के एक अत्यंत जागरूक किसान बुद्धिजीवी हैं। वह अपनी कविता ‘नई खेती’ में सदियों से चली आ रही अवतारवाद की परम्परा का खंडन करते हैं और उनका मानना है कि इसी अवतारवाद के चलते किसानो और मजदूरों का शोषण हुआ है और अब मैं इन अवतारों का विरोध करूँगा , इन मिथकों से लडूंगा –

‘मैं किसान हूँ

आसमान में धान बो रहा हूँ

कुछ लोग कह रहे हैं

कि पगले आसमान में धान नहीं जमा करता

मैं कहता हूँ कि पगले

अगर जमीन पर भगवान जम सकता है

तो आसमान में धान भी जम सकता है

और अब तो दोनों में से कोई एक होकर रहेगा

या तो जमीन से भगवान उखड़ेगा

या आसमान में धान जमेगा'

विद्रोही पितृसत्ता, राजसत्ता और धर्म सत्ता के हर छद्म से वाकिफ हैं । परंपरा और आधुनिकता के मिथकों से अगाह भी हैं। विद्रोही पितृसत्ता को चुनौती देते हुए कहते भी हैं कि –

"इतिहास में वह पहली औरत कौन थी

जिसे सबसे पहले जलाया गया ?

मैं नहीं जानता

लेकिन जो भी रही होगी

मेरी माँ रही होगी"

विद्रोही खुद को नाजिम हिकमत, पाब्लो नेरूदा और कबीर की परंपरा का ही कवि मानते हैं । विद्रोही उसी दौर के कवि हैं, जब शिक्षा बहुजन जातियों की ओर जाती है। इसी दौर विद्रोही स्वर और सैंथैटिक्स कविताएं लिखी गई। यह वही समय जब कविता में सबाल्टर्न स्टडीज, आइडेंटिटी पॉलिटिक्स, उत्तर आधुनिकता, उत्तर मार्क्सवाद, उत्तर उपनिवेशवाद से कवि गहरे प्रभावित हुए हैं । यही वह समय है जब मध्यवर्गीय अवसरवादी तथाकथित वामपंथियों की मौका परस्ती और दो मुंहापन कविता में खुलता है या जन भाषा में कहूँ तो 'साहित्य के पटवारी' अपनी चकबंदी करते नजर आते हैं। इन्हीं को लक्ष्य करके विद्रोही कहते हैं कि -

'सब जानी हुई है सब जाना हुआ है

नस्ल तेरी और वस्ल तेरा

और जब सर की जरूरत आएगी

तब नहीं चलेगा पता तेरा

इस तरह रमाशंकर 'विद्रोही' की कविता-दृष्टि अत्यंत व्यापक है। जो समाज से वंचित वर्ग के दर्द को अत्यंत आवेश व आक्रोश के साथ दर्ज करती है। इनकी कविता दृष्टि में बहुजन महापुरुषों के संघर्ष कि दास्तान भी बयां होती है जिनका वैचारिक आधार वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न व तर्क कि कसौटी पर टिका हुआ है ।

शोध सार / Research summary

Yugchetna in poet Ramashankar vidrohi's poems

Ramashankar 'vidrohi' belongs to progressive consciousness. The combination of perceptions and emotions is found sufficiently in his poems. He has great sympathy for farmers and labourers in his heart. Seeing today's scenario, society and politics, he has attacked on it through his expressions. Vidrohi's poem is not merely an expression but it is an opposition. The poem attacks aptly on the then reign. The pivot of his poems is the comman man, who ploughs the fields, works for wages, pulls rickshaw, serves in the offices. The biggest thing is that the man in his poems is rebellion. Changes in the grammar of poems of vidrohi's can be seen, which gives new meaning to the language, expression and sensitivity. Vidrohi is the ally of world literature. He has gone far beyond the boundaries. He has been confident about his writing ab initio. He has always enjoyed remaining conscious about his time and raising the voice for the deprived section in the system. The poem of vidrohi affect deeply our mind. But there is violent turbulence in his poems. Where the woman does not immolate but the whole universe turns into burning letters. One feels ignited while reading those letters –

"Centuries pass

Reigns change,

Whatever remains is the identification of murder,

Testimonies became meaningless

And my village remains deprived of the light of progress,

As the papers shows that

The desputed land belongs to Ram Janki."

Vidrohi's poems directly challenges our academic dwarfism. Vidrohi has also been penniless like Kabir and Muktibodh but hi never regret for his self sacrifice. He never boasted his poems. He found his poems in movement and faced policie's torture by his poems. He has always denied the modern domination of written and printed words. His poems have many tunes, many color's and the way he thinks is the poem. He cries, sings, talks in the poem only. Whenever he was asked what poem is, he always replied –

"What poem is

Is the farming

Is the off springs for poet

Is the interest for father

Is the food for mother"

He did not follow the traditional path but chose the tough path fill of throns for his expression through his poems and always say that "I am your poet". In today's scenario a very few posts make their poem the weapon of expression, living and fighting. He know all the mythes and the weakness of past(history).

Vidrohi wants to make the false stories meaningless. He understood Marx and like Nagarjun he also realised that the requirement of people can't be fulfilled with love and war. He described the rise feudalism in very simple words –

"The first woman in the history was murdered
By his own son following his father's mandate,
Jamadagni asked his son (Parshuram)
I order you to kill your mother,
And the son did the same,
In this way son belongs to father,
And the patriarchy came."

Vidrohi is the poet of our indigenous nation. He is the poet of the people who are future nation. Basically, Vidrohi is a very attentive farmer intellectual. In his poem 'Nayi kheti' he rebuts the anthromorphic tradition which has been followed from centuries and he blames the anthromorphism for the explotation

of farmers and labourers and now I shall oppose these avtars and fight against the myths –

" I am a farmer
I am growing paddy (crop) in the sky
Some people are saying
That idiot paddy doesn't grow in the sky
I reply that idiot
If God can grow on earth
Then the paddy can also grow in the sky
And now one of the two will remain
Either God will leave the earth
Or the paddy will grow in the sky."

Vidrohi is aware of every psuedo of patriarchy, government power, religion. He is aware of the myths of tradition and modernism. Challenging patriarchy Vidrohi says that –

Who was the first women in the history
Who was burnt for the first time?
I don't know
But whoever she had been
She would have been my mother.

Vidrohi considers himself and Nazim Hikmat, Pablo Neruda and Kabir for following the same tradition. Vidrohi belongs to the same period where education is received by Bahujans. In this period only revolting voice and psanthitic poems were written. This is the period where poets in their poems were deeply affected by subalten studies, identity politics, post modernism, post marxism and post colonialism. This is the time when double face and opportunism of middle class opportunists and so called leftists is revealed in the poem , if it could be said in simple words, then the ' Sahitya ke patwari' are found consolidating. Targeting them Vidrohi says –

"All know everything is well known
Your breed and your wasl
And when the need for the head will come
Then you will not be present here."

Thus, Ramashankar 'vidrohi' has a very broad poetic view (kavita drishti), which depicts the pain of the deprived section of society with great passion and resentinent. In his poetic view the story of the bahujan mahapurush is also depicted whose ideological foundation is scientifically endowed and based upon rationale.